लअनती कौन 54

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

हमने पिछले फ़ोल्डर में उन गुनाहों के बारे में जाना कि जिन्हें अल्लाह माफ़ न करे तो तोहीद परस्तों यानि शिर्क न करने वालों को भी सजाएं भुगतनी पड़ सकती है। अब इस फ़ोल्डर में हम उन आमाल व अफ़आल का ज़िक्र करेंगे जिन पर अल्लाह के रसूल सल्ल. ने लअनत भेजी है या जिन पर खुद अल्लाह तआला ने लअनत की है। ताकि हम और हर वोह शख़्स जो अल्लाह पर और उसके रसूल सल्ल. पर ईमान रखता है इन आमाल व अफ़आल से दूर रहे और अगर कहीं ग़ल्ती से या भूल व लाइल्मी की वजह से इनमें मुलव्वस है तो तौबा कर ले और बाज़ आ जाए। इसलिए कि इसी में भलाई है।

लअनत रहमत की ज़िद है। रहमत का मतलब कुरबत व नज़दीकी होता है तो लअनत घुतकारने, फटकारने, भगाने व खदेड़ने को कहते है। जिन कामों के करने पर अल्लाह की या उसके रसूल सल्ल. की तरफ़ से किसी बन्दे को घुतकार या फटकार मिले। उसके बुरे अन्जाम के बारे में कोई शक नही रह जाता। वो काम या आमाल ये हैं–

1. जहालत परस्ती–अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया ''वह शख़्स हममें से नहीं है जो चेहरे पर मारे, गिरेबाने चाक करे और जाहिलियत के ज़माने की पुकार पुकारे।'' (बुखारी–1296, अबुदाऊद–3130) ''अल्लाह लअनत करे उस (औरत) पर जो अपने चेहरे पर थप्पड़ मारे, गिरेबान को चाक करे और जो हलाकत व बर्बादी को पुकारे।'' (इब्ने हुब्बान)

2. क़ब्र परस्ती – अल्लाह के रसूल सल्ल. ने अपनी उस बीमारी में जिससे आप सल्ल. शिफ़ायाब न हो सके फ़रमाया ''अल्लाह की लअनत हो यहुद व नसारा पर कि उन्होंने अपने नबीयों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया।'' (बुख़ारी–1330, मुस्लिम–1184, अहमद 24561, इब्ने हुब्बान–2327)

ज़रा सोचिए–जब अम्बिया अलैहि. की क़ब्रों को सज्दा गाह बनाने वाले लअनती हैं तो वो लोग जो आम लोगों की क़ब्रों को (जिन्हें वोह ओलिया अल्लाह समझते हैं) सज्दा करते है या कराते हैं। आप सल्ल. की नज़र में क्या होंगे? आप सल्ल. ने यह भी फ़रमाया ''अल्लाह का सख़्त गज़ब नाज़िल हो उन लोगों पर जिन्होंने अपने नबीयों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया।'' (बुखारी–437, मुस्लिम–1185)

3. गै़रूल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करने वाले– अल्लाह के अलावा किसी

और की खुशनूदी की ख़ातिर ज़िब्ह किये गए जानवर के खाने को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है। (बक़रा–173, माइदा–03, अनआम–145, नहल–115)

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''अल्लाह लअनत करे उस शख़्स पर जो ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करे।'' (मुस्लिम–5124, नसाई–4434, अहमद–855)

4.क़ब्रो की ज़ियारत करने वाली औरतें– ''अल्लाह की लअनत हो कसरत से क़ब्रों की जियारत करने वाली औरतों पर।'' (इब्ने माजा–1574, तिर्मिज़ी–926, इब्ने हुब्बान–3179–हसन)

''अल्लाह की लअनत हो क़ब्रिस्तान जा कर ग़ैर शरई काम करने वाली औरतों पर और उन लोंगों पर जो क़ब्रों पर मस्जिदें बनाते हैं और उन पर चिरागा करते हैं।'' (अबुदाऊद–3236, नसाई–2043, इब्नेमाजा–1576, अहमद–2030–हसन)

जब आम क़ब्रों की ज़ियारत को जाने वाली औरतें नबी सल्ल. की ज़बानी लअनती हैं। जहां जाकर दुनिया से बेरग़बती पैदा होती है, और अपनी मौत व आख़िरत याद आती है तो दरगाहों–दरबारों की ज़ियारत को जाने वालिया किस दर्जे में आएगी?

5. वो मर्द व औरतें जो एक–दूसरे का रूप धारें– ''अल्लाह लअनत करे उन मर्दो पर जो औरतों से मुशाबेहत करते है और अल्लाह लअनत करे उन औरतों पर जो मर्दो से मुशाबेहत करती है।'' (बुख़ारी–5886, तिर्मिज़ी–2563, अहमद–5328)

6. वो मर्द व औरतें जो एक–दूसरें का लिबास पहनें– ''अल्लाह की लअनत हो ऐसे मर्द पर जो औरत का लिबास पहने और उस औरत पर जो मर्द का लिबास पहनें।'' (अबुदाऊद–4098, अहमद–8292)

7. फ़ैशन परस्त औरतें– ''अल्लाह के रसूल सल्ल. ने ऐसी औरत को भी दूसरों के बाल लगवाने की इजाज़त नहीं दी जिसके बाल बीमारी की वजह से गिर गए हों। ख़्वाह वह पहली रात की दुल्हन ही क्यों न हो।'' (बुख़ारी–5936, मुस्लिम–5565, इब्ने माजा–1988, अहमद–27457) और फ़रमाया आप सल्ल. ने ''अल्लाह ने लअनत की है बाल जोड़नें वाली और बाल को जुड़वाने वाली औरत पर, गोदने और गुदवाने वाली औरत पर और उस पर जो दांतो को नोकदार बनवाए।'' (बुख़ारी–5943, मुस्लिम–5573, अहमद–4724, नसाई–5104)

8. भवें बारीक करने वाली औरतें– ''अल्लाह की लअनत हो बाल नोचने वाली पर और उस औरत पर जो किसी से यह ख़िदमत ले।'' (बुख़ारी–5931, अबुदाऊद–4169–70)

इमाम नौवी रह. ने भवों के बाल साफ़ करने की शदीद मुख़ालिफ़त की है और इसका शुमार 'नम्स' यानि बाल नोचने में किया है, जो हराम है। इसलिए कि आप सल्ल. ने अल्लाह की दी हुई शक्ल व सूरत को बदलने पर लअनत की है।

9. बिना शौहर की इजाज़त के घर से बाहर निकलने वाली औरते– ऐसी

औरत भी लअनती है। इसलिए कि आप सल्ल. ने फ़रमाया ''औरत अपने घर से अगर शौहर की इज़ाज़त के बग़ैर निकले तो फ़रिश्ते उस पर लअनत भेजते हैं। यहं तक कि वह घर लौट आए या तौबा करें।'' (अबुदाऊद)

10. नोहा करने व सुनने वाली औरतें–''जो कोई (मुसीबत में) अपने बाल मूंडे या बैन करे (या मुंह पीटे) या कपड़े फाड़े वोह हममें से नहीं है।'' (बुखारी–1296, अबुदाऊद–3130, नसाई–1870)

और फ़रमाया ''अल्लाह की लअनत हो 'नोहा' (चीख़ व पुकार के साथ मातम) करने वाली औरत पर और नोहा सुनने वाली औरत पर।'' (इब्ने माजा–1585, अबुदाऊद–3128, अहमद–11645–हसन)

11. शोहर की नाफ़रमान औरत– ''जब शौहर अपनी बीवी को बिस्तर की तरफ़ बुलाए और ओरत इन्कार करे। फिर शौहर वह रात गुस्से में गुज़ार दे तो फ़रिश्ते उस औरत पर सुबह तक लअनत करते रहते हैं।'' (बुखारी–5193, मुस्लिम–3538, दारमी–2271, अहमद 7465)

12. टाल–मटोल करने वाली औरत–''अल्लाह की लअनत हो उस औरत पर जो टाल–मटोल करे। जब शौहर बिस्तर की तरफ़ बुलाए तो कहे कि कल। यहां तक कि उसकी आंख उस पर ग़ालिब आ जाए यानि शौहर को नीद आ जाए। (तबरानी) औरतों को आप सल्ल. का यह फ़रमान नहीं भूलना चाहिये कि ''जब शौहर अपनी बीवी को अपनी हाजत के लिए बुलाए तो उसे चाहिये कि हाज़िर हो अगर चे वह चूल्हे पर रोटी ही क्यों न पका रही हो।'' (तिर्मिज़ी–1024–सही)

13. बहाने बाज़ औरत– ''अल्लाह की लअनत हो उस औरत पर जो हैज़ (माहवारी) से पाक हो। फिर उसका शौहर उसके पास आने का इरादा करे तो वह कहे कि मैं हाइज़ा (माहवारी से) हूँ।'' (अबु यअला)

14. लूती अमल करने वाले–''वह शख़्स मलऊन (लअनती) है जो क़ौमेलूत जैसा अमल करे।'' (अहमद–2817, मिश्कात अल मसाबीह–3583)

15. जनाने मर्द– ''अल्लाह की लअनत हो मुख़न्निस (नपुसंक) बनने वालों पर।'' (बुखारी–5886, अहमद–3060)

मुखन्नस से मुराद ऐसा शख़्स है जो औरतों का सा लिबास पहने हाथ पैरों को मेहन्दी से औरतों की तरह रंगीन करे। बात–चीत में जनाना लहजा इख़्तियार करे और जिसकी अदाएं व हरकात ज़नाना हों।

16. हलाला करने और कराने वाले–'' अल्लाह की लअनत हो हलाला करने और हलाला कराने वाले पर।'' (अबुदाऊद–2076, इब्नेमाजा–1934, तिर्मिज़ी–988, अहमद–4308–सही)

हज़रत अली रज़ि. और इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि ''हलाला करने व कराने को नबी सल्ल. के ज़माने में हम ज़िना और हराम समझतें थे। इमाम अबु युसुफ़ रह. और इमाम मुहम्मद रह. भी दूसरे अइम्मा रह. की तरह हलाले के निकाह को ग़लत मानते थे और कहते थे कि ''ऐसे निकाह से औरत पहले शौहर के लिए हलाल नहीं होती। (

17. माल व दौलत के पुजारी– ''जो शख़्स दीनार व दिरहम का गुलाम बन जाए, वह लअनती है।'' (तिर्मिज़ी–2172, मिश्कात अल मसाबीह–5180–हसन) मतलब यह कि जो शख़्स माल व दौलत की

मुहब्बत में इस क़दर खो जाए कि उसकी वजह से अल्लाह की इबादत व इताअत ही करना छोड़ दे। यानि दीन ही से दूर हो जाए तो वह धन–दौलत का गुलाम बन जाने की वजह से लअनती हो जाता है।

18. ज़खीरा अन्दोज़ी करने वाले– ''बाज़ार में माल दर आमद करने वाले को रिज़्क दिया जाता है और ज़खीरा अन्दोज़ी करने वाले पर लअनत भेजी जाती है।'' (इब्ने माजा–2153, दारमी–2586, मिश्कात–2768–ज़ईफ़)

19. रिश्वत लेने व देने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो रिश्वत लेने वाले पर, रिश्वत देने वाले पर और उस पर जो इन दोनों के बीच वास्ता बने।'' (इब्ने माजा–2313, अबुदाऊद–3580, अहमद–6532–सही)

20. ब्याज लेने वाले और देने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो सूद (ब्याज) खाने (लेने) वाले पर और सूद देने वाले पर और सूद की गवाही देने वाले पर और सूद की दस्तावेज़ लिखने वाले पर।'' (मुस्लिम–4092, इब्नेमाजा–2277, अबु दाऊद–3333, दारमी–2577, अहमद–14313, तिर्मिज़ी–1069)

21. शराब पीने वाले और पिलाने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो शराब निचोड़ने वाले, निचुड़वाने वाले, उठाने वाले और जिसकी तरफ़ उठाकर ले जाई जाए, पिलाने वाले, बेचने वाले, उसकी कमाई खाने वाले, खरीदने वाले और जिसके लिए खरीदी जाए, सब पर।'' (इब्ने माजा–3380, अबुदाऊद–3674, अहमद–4787–सही)

22. किसी जानदार को बांध कर निशाना लगाने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो उस पर जो किसी जानदार को बांधकर उस पर निशाना लगाए।'' (बुख़ारी–5515, मुस्लिम–5061, अहमद–1863)

23. किसी जानदार को बे वजह दाग़ने वाले– आप सल्ल. के सामने से जब एक ऐसा गधा गुज़रा जिसका मुंह दागा गया था। तब आप सल्ल.ने फ़रमाया ''अल्लाह लअनत करे उस पर जिसने इसको दाग़ा।'' (मुस्लिम–5552, अबुदाऊद–2564)

24. बाप के अलावा किसी और की तरफ़ निस्बत करने वाले– ''जिसने खुद को अपने हक़ीक़ी बाप के अलावा किसी दूसरे की तरफ़ मन्सूब किया। या ऐसा गुलाम जो अपने मालिक के अलावा किसी और को अपना आका बताए तो उस पर अल्लाह की, तमाम फ़रिश्तों की और सब इन्सानों की लअनत है।'' (बुख़ारी–7300, अहमद–2817, इब्नेमाजा–2609)

25. सहाबा किराम रज़ि. को बुरा–भला कहने वाले– ''जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को गाली दे रहे हो तो कहो कि तुम्हारी बदबख़्ती पर अल्लाह की लअनत है।'' (तिर्मिज़ी–3594)

26. वाल्दैन पर लअनत करने वाले–''अल्लाह लअनत करे उस पर जो अपने वाल्दैन पर लअनत भेजे।'' (मुस्लिम–5124, अहमद–855)

27. बिदअती को पनाह देने वाले– ''अल्लाह लअनत करे उस पर जो किसी बिदअती को पनाह दे।'' (मुस्लिम–5125, अहमद–9162) 'बिदअत' हर उस नए काम को कहा जाता है जिसे सवाब पाने की नीयत

से दीन समझ कर किया जाए। लेकिन शरीअत में जिसकी कोई असल न हो।

28. ज़मीन के निशान मिटाने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो उस शख़्स पर जो ज़मीन के निशान में बदलावे करें।'' (मुस्लिम–5124, अहमद–855) ज़मीन के निशान से मुराद वह अलामती पत्थर है जो ज़मीन की हद पर नसब किया जाता है। जिसके ज़रिये एक–दूसरे की ज़मीन के बीच फ़र्क़ किया जाता है।

29. मुसला करने वाले–''अल्लाह लअनत करे उस शख़्स पर जो किसी जानदार का मुसला करे। (मुस्लिम) (मुसला से मुराद नाक–कान काटना है।)

30. चोरी करने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो चोर पर जो अन्डे की चोरी करता है और उसका हाथ काटा जाता है या रस्सी चुराता है तब भी बदले में उसका हाथ काटा जाता है। (बुख़ारी–6799, मुस्लिम–4408, नसाई–4888, अहमद–7430, इब्ने माजा–2583)

31. निकाह न करने वाले– ''ऐसा मर्द या औरत जो सारी उम्र (बिना किसी मजबूरी के) बगै़र निकाह किये गुज़ार दे, वह लअनती है।'' (अहमद–7878)

(यहया बिन ज़करिया अलैहि. इससे बरी हैं।)

32. लोगों में फूट डालने वाले– ''वह शख़्स लअनती है जो मां–बेटे या भाई–भाई के बीच जुदाई कराएं।'' (इब्ने माजा)

33. मक व फ़रेब करने वाले– ''वह शख़्स लअनती है जो किसी मोमिन को नुक़्सान पहुंचाए या उसे धोखा दे।'' (तिर्मिज़ी–1758, मिश्कात अल मसाबीह–5043)

मोमिन को नुक़्सान पहुंचाना यह है कि मआशी लिहाज़ से उसे तबाह करने की कोशिश की जाए या उसके जिस्म को नुक़्सान पहुंचाया जाए।

34. मुसलमान पर लअनत करने वाले– ''जिस शख़्स ने किसी मुसलमान पर लअनत की तो वह ऐसा है कि जैसे उसका क़त्ल कर दिया और जिसने किसी मुसलमान पर कुफ़्र का इल्ज़ाम लगाया तो यह भी उसको क़त्ल करने जैसा है।'' (बुख़ारी–6047)

''मोमिन लअनत करने वाला नहीं होता।'' (तिर्मिज़ी–1835)

''जो अपने भाई पर लअनत करता है। वह कबीरा गुनाह करता है।'' (सिलसिला अहादीस अल सहीहा–148, तबरानी–6670)

''मोमिन के लायक़ नहीं कि वह लअन–तअन करने वाला हो।'' (अदब अल मुफ़रद–309) ''बहुत ज़्यादा लअनत करने वाले लोग क़यामत के दिन न किसी की सिफ़ारिश कर सकेंगे और न ही गवाह बन सकेंगे।'' (मुस्लिम–6610)

35. किसी मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा करने वाले– ''जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा करता है। उस पर फ़रिश्ते उस वक़्त तक लअनत करते हैं जब तक कि उस हथियार को वह रख नहीं देता। अगर चे वह उसका सगा भाई ही क्यों न हो।'' (मुस्लिम–6666, अहमद–7470, बुख़ारी–7072)

36. वादा पूरा न करने वाले– ''जो शख़्स किसी मुसलमान से वादा करे और वादा करके तोड़ दे तो उस पर अल्लाह की, तमाम फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की लअनत होती है।'' (मुस्लिम)

37. रास्ते या सायादार पेड़ के नीचे गन्दगी करने वाले– ''जो शख़्स लोगों के रास्ते में या उन के साया लेने की जगह में गन्दगी (पाख़ाना) करता है, वह लअनती है।'' (अहमद–2715, मुस्लिम)

''जो मुसलमानों को उनके रास्ते के मामले में तक्लीफ़ दे तो उस पर उनकी लअनत साबित हो जाएगी।'' (सिलसिला अहादीस सहीहा–401)

38. अन्धे को रास्ते से भटकाने वाले– ''अल्लाह की लअनत है उस शख़्स पर जो किसी अन्धे शख़्स को रास्ते से भटकाए।'' (अहमद–7878, अदब अल मुफ़रद–892)

39. जानवर से बदफ़ेअली करने वाले– ''अल्लाह की लअनत हो ऐसे शख़्स पर जो जानवर से बदफ़ेअली करे।'' (अबु यअला–2539, सिलसिला अहादीस सहीहा–150)

40. तस्वीर बनाने वाले– ''जानदार की तस्वीर (मूर्ति) बनाने वाले लअनती है।'' (बुख़ारी–5962, अहमद–18963)

''जो शख़्स दुनिया में तस्वीर (मूरत) बनाएगा। क़यामत के दिन उस पर जोर डाला जाएगा कि उसे वह जिन्दा भी करे। हालांकि वह उसे जिन्दा नहीं कर सकता।'' (बुख़ारी–5963)

41. वस्त हलके में बैठने वाले–''जो शख़्स किसी हलक़े के बीच में बैठता है, वह मलऊन है।'' (अहमद–23768, तिर्मिज़ी–2533–हसन)

42. बुरे हुक्मरान– ऐसे हुकमरान जो रहम न करें, वादा न पुरा करे और इन्साफ न करें। उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इन्सानों की लअनत हो।'' (अहमद–20015, अबुदाऊद–5122–सही)

43. कुफ़्र करने वाले– ''अल्लाह का और उसके रसूल (सल्ल.) का इन्कार करने वाले लअनती हैं।'' (बक़रा–आयत–89)

44. ज़ुल्म करने वाले– अल्लाह पर झूट बांधने वाले ज़ालिम (मुश्रिक) लअनती है। (हूद–आयत–18)

45. झुट बोलने वाले– झुट बोलने वालों पर अल्लाह की लअनत है।'' (आले इमरान–आयत–61)

मुहतरम हज़रात! दुनिया मलऊन है और जो चीज़ दुनिया में है वह भी लअनती है। मगर अल्लाह का ज़िक्र और हर वह चीज़ (बात) जिसे अल्लाह पसन्द करता है और आलिम व इल्म हासिल करने वाला।'' (इब्ने माजा–4110, मिश्कात अल मसाबीह–5173–हसन)

तो चाहत यही है कि मैं और आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इल्म हासिल करने, अल्लाह का ज़िक्र करने और हर उस काम में लगाएं जो अल्लाह को पसन्द है। अल्लाह हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

मो. 9214836639, 9887239649

दिनांक 01/11/2012